SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

egkfo|ky; esa vè;;ujr fofHkUu èkekZs ds fo|kfFkZ;ksa dh vyxko çof̀Ùk ij vè;;u% nqxZ ,oa fHkykbZ ds egkfo|ky; ds lanHkZ esa

y{eh oekZ] शोधार्थी, शिक्षाविभाग
जगदगुरु शंकराचार्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन अमदी नगर हुडको, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
vatuk] (Ph.D.), शोध निर्देशिका, प्राचार्य
प्रिज्म कॉलेज ऑफ एजुकेशन, महकाखुर्द, उतई, पाटन, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
y{eh oekZ] शोधार्थी, शिक्षाविभाग
जगदगुरु शंकराचार्य कॉलेज ऑफ एजुकेशन
अमदी नगर हुडको, भिलाई, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
vatuk] (Ph.D.), शोध निर्देशिका, प्राचार्य
प्रिज्म कॉलेज ऑफ एजुकेशन
महकाखुर्द, उतई, पाटन, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत
shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 25/01/2023
Revised on : -----
Accepted on : 01/02/2023
Plagiarism : 00% on 25/01/2023

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 0%
Date: Jan 25, 2023
Statistics: 0 words Plagiarized / 967 Total words
Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

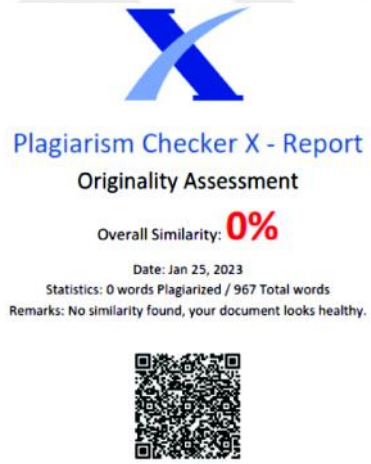

'kks/k lkj

प्रस्तुत लघु शोध का उद्देश्य महाविद्यालयों में अध्ययनरत विभिन्न धर्मों के विद्यार्थियों के अलगाव प्रवृत्ति का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध कार्य में दुर्ग एवं भिलाई के महाविद्यालयों में अध्ययनरत् महिला एवं पुरुष विद्यार्थियों का चयन प्रश्नावली के आधार पर किया गया जिसमें 60 महिला एवं 60 पुरुष विद्यार्थियों को लिया गया। महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विभिन्न धर्मों के विद्यार्थियों के अलगाव प्रवृत्ति पर अध्ययन के लिए प्रोफेसर हरदेव ओझा (A-L-scale) मापनी का प्रयोग किया गया। शोधकर्ताओं द्वारा कला, विज्ञान, वाणिज्य विषय के विद्यार्थियों का चयन उद्देश्य पूर्ण न्यायदर्श विधि से किया गया। जिसमें पुरुष और महिला विद्यार्थियों की संख्या 120 थी। अध्ययन का परिणाम या दर्शाते हैं कि विभिन्न धर्मों के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में अलगाव प्रवृत्ति नहीं पाई गई।

eq[; 'kCn

egkfo|ky;] fo|kFkhZ] vyxkookn-

çLrkouk

भारतीय संस्कृति की विशेषता रही है कि यह कभी भी जड़ और स्थिर नहीं बनी। भारत के लंबे इतिहास के दौरान उसकी संस्कृति आंतरिक कारणों एवं दूसरी संस्कृतियों के संपर्क के कारण लगातार परिवर्तित और विकसित होती रही। यहां विभिन्न जाति धर्म समुदाय और रंग के लोग निवास करते हैं। भौगोलिक विभिन्नताओं के साथ जैविक विभिन्नताएं पाई जाती है। व्यक्तिगत विभिन्नता भारत की पहचान है।

भारत की सांस्कृतिक विरासत भारतीय जनता के

हजारों वर्षों के इतिहास के दौरान उनके सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन में हुई विकास का परिणाम है। प्राचीन काल से ही विश्व की अन्य देशों की सभ्यताएं भारत में अपनी परंपरा लेकर आती रही है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद जैसे वेदों की रचना हुई। उपनिषद वेद, कर्मकांड के अलावा ज्योतिष व्याकरण और ध्वनि शास्त्र की रचना की गई। यहां विशाल पतित पावनी मां गंगा का उद्गम स्थल है जिसे भारतवर्ष में पवित्र पाप नाशनी के नाम से जाना जाता है। हिंदू धर्म को सनातन धर्म के रूप में माना जाता है। हिंदुओ को देवी–देवताओं एवं कर्मकांड पर विशेष आस्था रहती है। भारत धर्म आस्था, कर्मकांड, पूजा एवं त्यौहार पर विश्वास करता है। अंग्रेजों के भारत आगमन और उनकी सत्ता स्थापना के बाद भारतीय समाज में अनेक परिवर्तन आए। पाश्चात्य शिक्षा संस्कृति प्रशासन की पद्धति औद्योगिकीकरण और विज्ञान के प्रभाव से जीवन मूल्य और विचारों में परिवर्तन आया। समन्वय हमारी संस्कृति का प्रमुख गुण है, हम सभी प्राणियों को एक ही ईश्वर के संतान मानते हैं और सभी के प्रति भाईचारे की भावना रखते हैं और यह हमारा स्वभाव है। जाति शब्द एक बंद वर्ग है जाति व्यक्तियों का वह समूह है जिसकी सदस्यता जन्म से रचित तथा निर्धारित होती है जिसमें उन्होंने जन्म लिया है। धर्म जीवन में भावनाओं को नियंत्रित रखने का एक साधन है। धार्मिक समूह समाज को एक निश्चित दिशा प्रदान करता है और प्रत्येक समूह का यह प्रयास होता है कि अपने धर्म के साथ–साथ दूसरे धर्म पर भी आस्था एवं विश्वास रखें। हमारे समाज को जोड़ने या समाज के विकास में विशेष योगदान विद्यालय का रहा है। विद्यालय को समाज का लघु रूप कहा गया है। विभिन्न धर्मों के लोग विद्यालय में आकर मिलते हैं तथा अपने विचारों एवं भावनाओं से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

vyxko çofÙk

जहां भाषाई विभिन्नता, जातिगत विभिन्नता या समाज में वैचारिक मतभेद पाई जाती है वहां से अलगाव प्रवृत्ति का जन्म होता है।

mís';

प्रस्तुत लघु शोध का उद्देश्य महाविद्यालयों में अध्ययनरत् विभिन्न धर्मों के विद्यार्थियों के अलगाव प्रवृत्ति का अध्ययन करना।

ifjdYiuk

विभिन्न धर्मों के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में कोई अलगाव प्रवृत्ति नहीं पाई जाएगी।

U;kn'k

प्रस्तुत शोध कार्य की समष्टि भिलाई दुर्ग के महाविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थी होंगे जिसमें 60 पुरुष एवं 60 महिलाएं होंगी।

rkfydk 1% लिंग एवं विभिन्न धर्म के अनुसार न्यादर्श की संख्या प्रदर्शित करती तालिका

महाविद्यालय का नाम	विद्यार्थियों की संख्या							
	हिन्दू		मुस्लिम		सिख		इसाई	
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
1 कल्याण महाविद्यालय	05	05	05	05	05	03	02	04
2 सेंट थॉमस महाविद्यालय	04	04	05	05	02	02	04	04
3 खूबचंद बघेल महाविद्यालय	04	04	3	03	05	05	02	02
4 खालसा महाविद्यालय	03	03	02	04	05	05	02	04
योग	16	16	15	17	17	15	10	14

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

midj.k

प्रस्तुत लघु शोध में शोधकर्ता ने अपनी समस्या के समाधान के लिए हरदेव ओझा द्वारा निर्मित ''अलगाव प्रवृत्ति मापनी'' का प्रयोग किया और इस मापनी के आधार पर अपने आंकड़े एकत्रित किए। इस मापनी में 20 कथनों का समावेश किया गया है,जिसे शोधकर्ता द्वारा उत्तर दाता से स्वतंत्र रूप से भरवाया गया है। सकारात्मक एवं नकारात्मक कथनों द्वारा फलांकन किया गया है।

rkfydk 2% प्रदत्त विश्लेषण

क्रं.	महाविद्यालयीन विद्यार्थी	प्रदत्तों की संख्या	मध्यमान	प्रामापिक विचलन	टी. मूल्य	सार्थकता का स्तर
1	हिन्दू	30	63.73	4.23	1.15	P>0.05
	मुस्लिम	30	58.66	6.37		
2	हिन्दू	30	62.19	4.54	1.18	P>0.05
	सिख	30	60.23	4.22		
3	हिन्दू	30	6213	4.54	1.19	P>0.05
	इसाई	30	60.06	4.22		
4	मुस्लिम	30	5823	5.65	1.12	P>0.05
	सिख	30	60.33	4.22		
5	मुस्लिम	30	58.23	5.65	1.05	P>0.05
	इसाई	30	60.33	4.22		
6	सिख	30	60.33	4.22	0.44	P>0.05
	इसाई	30	60.06	4.75		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

fu"d"kZ

इस लघु शोध में यह पाया गया कि विभिन्न धर्मों के महाविद्यालयीन विद्यार्थियों में कोई अलगाव प्रवृत्ति नहीं पाई गई। यह कहा जा सकता है कि आज हमारी युवा पीढ़ी जीवन में बहुत अधिक सावधान हो चुके हैं, सामाजिक गतिविधियों में बढ़–चढ़कर भागीदारी करते हैं। समाज और धर्म के प्रति सकारात्मक सोच रखने वाले युवा हर एक चुनौतियों का सामना करने के लिए तत्पर है। शिक्षा के समान अवसर ने सभी को सकारात्मक सोच तथा जीवन के प्रति लगाव और धर्म के प्रति निष्ठा का विकास करना सिखा दिया है।

lanHkZ lwph

1. अग्रवाल जे.पी. (2001) *''उदीयमान भारतीय समाज में अध्यापक''* अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा पृष्ठ–3।
2. हरप्रसाद भार्गव, गुप्ता एस.पी (2001) *''उच्चतर शिक्षा के मनोविज्ञान''* शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ438–440।
3. कपिल एन.के. (1984) *''अनुसंधान विधियां''* हरप्रसाद भाग भार्गव 4/230 कचहरी घाट आगरा पृष्ठ– 40–55।
4. कपिल एच.के. (2005) *अनुसंधान विधियां आगरा राय,* पारसनाथ (1999) *''अनुसंधान के आंकड़ों का संकलन''* पृष्ठ– 205–310।
5. सिन्हा एवं सिन्हा (2007) *''सामान्य मनोविज्ञान''* भारती भवन प्रिंटर्स पटना पृष्ठ– 224–225।
6. त्रिपाठी के. एन. (2008) *''जनसंख्या नियंत्रण''* दीपक पब्लिकेशन शैली पृष्ठ 61, 67, 69।

****